अखिल भारतीय जैन एकता मंच संस्थान द्वारा जनहित में प्रकाशित

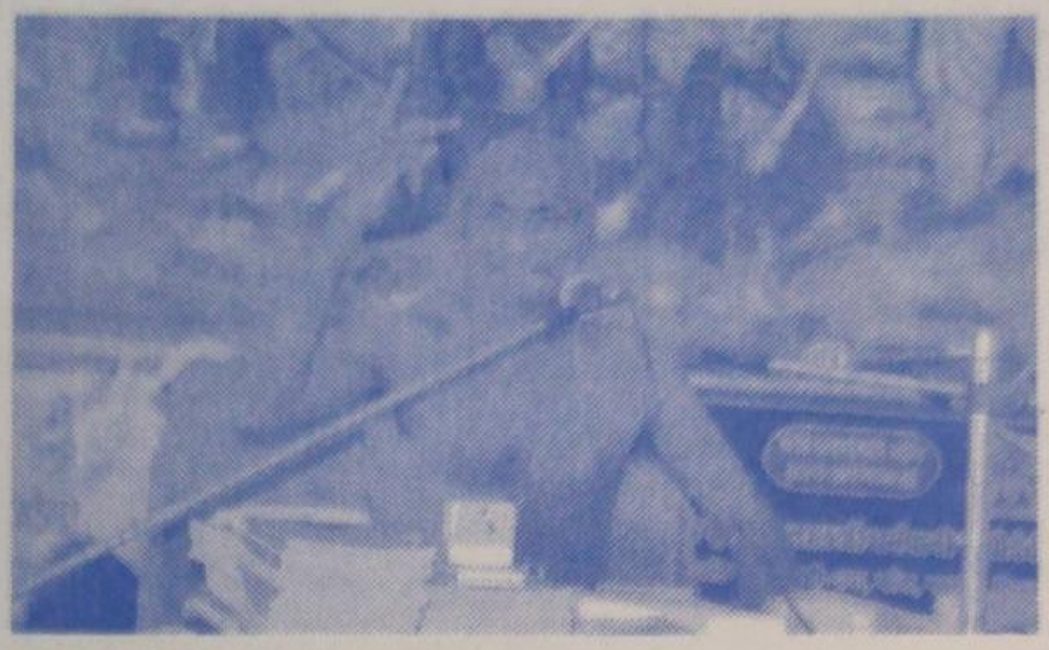

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य कनकनंदीजी (हल्दीघाटी म्यूजियम)

सर्वोदयी भारतीय संस्कृति

- आचार्य कनकनन्दी

चाल : 1 चन्दा मामा दूर के ..... 2 क्या मिलिये .....

आर्य संस्कृति सबसे प्यारी ..... जैन संस्कृति सबसे न्यारी .....
प्रकृति रक्षण करने वाली ..... आत्मिक विकास करने वाली .....
..... (ध्रुवपद).....

यहाँ की धरती पावन वाली ..... षट्ऋतु (व) सस्य स्यामलावाली .....
नदी पर्वत जंगल वाली ..... ह्रद समुद्र से सहित वाली .....

तीर्थंकर बुद्ध जननी वाली ..... ऋषि–मुनि–आचार्य की प्रिय जननी ....
ज्ञानी–विज्ञानी गणितज्ञ कवि ..... आयुर्वेद कलाज्ञ की आप जननी .....

आपसे सभ्यता–संस्कृति जन्मी .... अहिंसा समता शान्ति विस्तरी .....
आध्यात्मिकता व मुक्ति प्रदायी ..... विश्वगुरुत्व की आप दातारी .....

विश्व कुटुम्ब की शिक्षा दात्री ..... वैश्विक शान्ति आप प्रदात्री .....
अनेकान्त–स्याद्वाद शिक्षा दात्री ..... आत्मिक शान्ति आप प्रदात्री .....

भारतीय जन तुम्हें भूल गये हैं.....भौतिक भोग में मस्त हो गये है
जिससे अन्याय पाप बढ़े हैं ..... शोषण भ्रष्टाचार रोग बढ़े हैं

पाश्चात्य लोग तुम्हें मान रहे .... शोध बोध में आगे बढ़ रहे ....
बहुविध विकास वे कर रहे .... इण्डियन उनका फॉलो कर रहे ...

भारतीय अभी तुम जाग जाओ .... स्व–संस्कृति को शीघ्र अपनाओ ....
सर्वोदय सुख तुम भी पाओ ... 'कनकनन्दी' के आशीष पाओ .....

Scanned by TapScanner

"अभिनन्दन हे ! विश्व गुरू भारत"

(भारतीय महान् इतिहास एवं हमारा कर्त्तव्य)

आचार्य कनकनन्दी

राग-होठों पे सच्चाई सा योनारा .... तुम दिल की धड़कन .....

विश्व वन्दित अभिनन्दित .... विश्व गुरू भारत है।
इसका नाम ही आर्यावर्त व ..... अजनाभि देश है ।। धु. ।।
पहले से यहाँ आर्य रहते थे ..... इसलिये आर्यावर्त ।
नाभिराय के कारण से हुआ ..... अजनाभि यह देश ।।
इनके पुत्र ऋषभदेव ..... हुये प्रथम तीर्थंकर ।
ज्ञान–विज्ञान शिक्षा संस्कृति .... जिनसे हुआ प्रचार ।। 1 ।।

इनके पुत्र भरत से हुआ .... भारत देश है नाम ।
ब्राह्मी पुत्री से ब्राह्मी लिपि व ..... सुन्दरी से अंकज्ञान ।।
इसी देश में जन्म लिये हैं ..... 'मनु' या 'कुलंकर' ।
मानव नामकरण इनसे हुआ .... नृवंश रूपी नारी–नर ।। 2 ।।

इसी देश में जन्में हैं ..... बुद्ध ज्ञानी मुनि विद्याधर ।
लेखक कवि गणितज्ञ ..... आयुर्वेदज्ञ कलाधर ।।
जिनसे जन्मा ज्ञान–विज्ञान ..... आध्यात्मिक महाज्ञान ।
जिसके कारण भारत बना ..... 'विश्वगुरु' महान् ।। 3 ।।

इसी देश की हम हैं सन्तान ..... हमें बनना है महान् ।
मन वचन काय आत्मा कृति से .... करके कार्य महान् ।।
"आत्मसंस्कृति व विश्वबन्धुत्व' ..... से करना है "सर्वोदय" ।
स्व–पर–विश्वकल्याण करना .... 'कनकनन्दी' का है ध्येय ।। 4 ।।

विश्वगुरू भारत माता

आचार्य कनकनन्दी

रागः चालः ओडिसी- बंगला .....

वन्दे भारत जननी ..... जननी जननी जननी ऽऽऽ
धृत पयोदधि तव पद कमला .... शिर पर शोभित मुकुट हिमालया ऽऽऽ
जननी ..... ऽऽऽ (ध्रुवपद) .....

नद–नदी–झरना तव रक्तशिरा ..... वन–उपवन शोभित शरीरा ऽऽऽ
सस्य शामला चारू वदना ..... पशु–पक्षी–मानव तव बाला ऽऽऽ
जननी ..... ऽऽऽ (ध्रुवपद) .....

तीर्थंकर–बुद्ध–ऋषि प्रसूता ..... ज्ञानी–विज्ञानी–कवि की माता ऽऽऽ
आयुर्वेद संगीतज्ञ–गुणी की माता ... लेखक–तत्त्वज्ञ–वीरों की माता ऽऽऽ
जननी ..... ऽऽऽ (ध्रुवपद) .....

शिक्षा–संस्कृति–आध्यात्म दात्री .... धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष प्रदात्री ऽऽऽ
ज्ञान–विज्ञान–गणित जननी..... न्याय–राजनीति–कला प्रदात्री ऽऽऽ
जननी ..... ऽऽऽ (ध्रुवपद) .....

"वसुधैव कुटुम्ब" की आप प्रदात्री .... अनेकान्त–स्याद्वाद–अहिंसा प्रदात्री ऽऽऽ
"सत्य–शिव–सुन्दर" बोधदात्री .... चार आश्रम की प्रबोधन दात्री ऽऽऽ
जननी ..... ऽऽऽ (ध्रुवपद) .....

विश्व गुरुत्व से आप शोभिता / (पण्डिता) .....
नर–सुर–विद्याधर मण्डिता ऽऽऽ
स्वर्गलोक से भी आप गरिष्ठा / (श्रेष्ठा) .....
'कनकनन्दी' चाहे तव प्रतिष्ठा ऽऽऽ
वन्दे भारत जननी ... जननी जननी जननननी ऽऽऽ

Scanned by TapScanner

"सार्वभौम सर्वोदयी संविधान तथा न्याय"

- आचार्य कनकनन्दी

(राग - क्या मिलिये ऐसे लोगों से ..... , तुम दिल की धड़कन .....)

देश–विदेशों के संविधान समाहित, पंचव्रतों के आचरण में ।
सप्त–व्यसन चतुः कषाय त्याग, नवकोटि के आचरण में ।। ध्रु दृ ।।
संविधान के उल्लंघन से जो, अविधेय काम होता है।
उसी के परिमार्जन हेतु, दण्ड विधान विधेय है।
अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य अपरिग्रह का पालन है।
मद्य, मांस, जुआ, शिकार, चोरी, परस्त्री गमन वेश्या वर्जन है।। 1 ।।

क्रोध मान माया लोभ का त्याग, तथाहि सप्त व्यसन है।
मन वचन काय कृत कारित व, अनुमत से वर्जन है ।।
यह ही सार्वभौम संविधान, विधेय देश–विदेशों के ।
राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय सहित, संयुक्त राष्ट्र संघ के ।। 2 ।।

कोई व्यक्ति या समाज राष्ट्रादि, संकीर्ण स्वार्थ धर्मादि से ।
यदि इसी में विकृत करते, अमान्य हो संविधान से (में) ।।
जो व्यक्ति से राष्ट्र तक करते, इसी का उल्लंघन है।
उसी के परिमार्जन हेतु, विधेय दण्ड विधान है।। 3 ।।

यथा दयालु सुयोग्य डॉक्टर, निरोगी करता रोगी को ।
तथा न्यायाधीश न्यायप्रक्रिया से, निर्दोष करे दोषी को ।।
इसी की ही विस्तार हो धारा, उपधारा माध्यम से ।
अनावश्यक जटिल प्रक्रिया, न हो स्वार्थ कुटिल से ।। 4 ।।

न्यायाधीश हो तीर्थंकर सम, या गणधर आचार्य सम ।
यथायोग्य काल में विक्रमादित्य या जयकुमार मंत्री सम ।।
यह ही सार्वभौम (व) सर्वोदयी, संविधान तथाहि न्याय विधान ।
'कनकनन्दी' इसे ही यथार्थ मानता, अन्य को न देता सम्मान ।। 5 ।।

पुण्यार्जक : श्री राजमल जी लोलावत व धर्मपत्नी श्रीमती गुणमाला
श्री भूपेन्द्र दामावत (भोमू) मोडीलाल प्रजापत, उदयपुर (राज.)
सम्पर्क सूत्र : अखिल भारतीय जैन एकता मंच संस्थान
(आशीर्वाद प्राप्त – आचार्य कनकनन्दी गुरूदेव)
आदेश्वर धाम जैन तीर्थ झाझेंला, मु.पो. सेमा , त. नाथद्वारा
जि. राजसमन्द (राज.) मांगीलाल मादरेचा – 9983618172

COPL : 11721

Scanned by TapScanner